जीजिविशा

जहाँ चाह - वहाँ राह

◄ भारती सोमानी

शादी के ग्यारह साल बीत गये और उम्र पैंतीस वर्ष को छूने लगी परंतु जिन्दगी में एक बहुत बड़ा खालीपन रहता था, हमें संतान का सुख न मिल पाया। घरवालों व जमाने के ताने सुनना एक मजबूरी हो गई। दबी ज़बान से लोग सलाह देने लगे कि बच्चा गोद ले लो, भले ही कितनी भी अच्छी सोच से दी गई हो यह सलाह दिल में तीर की तरह उतर जाती थी। पति की नौकरी में बार–बार तबादले होते रहे और ग्यारह सालों में हमने आठ छोटे–बड़े शहर देख लिये। हर नई जगह जाने पर एक नई डॉक्टर, फिर वही जाँचें और फिर एक बड़ी सी निराशा। कई बार तो इतनी हताशा लगने लगी की जीवन ही बेमानी हो गया। मेरे पति इन नाजुक क्षणों में बहुत समझाते एवं हिम्मत न हारने की सलाह देते।

इन्हीं सब मानसिक तनावों, तबादलों व शायद अनुवांशिक कारणों से पहले मेरे पति को और तीन वर्ष बाद मुझे भी डायबिटीज़ हो गई। जब मुझे डायबिटीज हुआ तो डॉक्टरों ने मेरे गर्भधारण करने की संभावना को सिरे से नकारना शुरू कर दिया। इसी बीच मेरे पति की पोस्टिंग भोपाल हो गई। हम दोनों डॉयबिटीज के संबंध में परामर्श लेने भोपाल के एक मधुमेह एवं हारमोन विशेषज्ञ के यहाँ पहुँचे। बाहर जब अपनी बारी का इंतेज़ार कर रहे थे तब पास बैठी एक महिला से पता चला कि डॉक्टर साहब मधुमेह के सिवा इनफर्टिलिटी के मरीज भी देखते हैं। उस महिला को डॉक्टर साहब के इलाज से ही गर्भधारण हुआ है। यह सुनने के बाद हमें भी आशा की एक किरण दिखाई दी। डॉक्टर साहब ने हमें बताया कि पैंतीस साल की उम्र एवं डायबिटीज के होते गर्भधारण करने व गर्भ को पूरे नौ महीने सामान्य रखने में एवं प्रसव में जटिलतायें तो हैं पर यह असम्भव भी नहीं है। सबसे पहले तो जाँचों से पता चला कि मेरे पति के वीर्य में शुक्राणुओं (Sperm) की कमी है। दूसरी ओर मेरी दूरबीन के द्वारा पेट की जाँच में पाया गया कि मेरी दोनों फैलोपियन ट्यूब बंद हैं। डॉक्टर साहब ने बताया कि शायद बचपन में हुई टी.बी. या बार–बार डी. एण्ड सी. कराने से ऐसा हो सकता है। उन्होंने कहा कि आपके केस में अब एक ही रास्ता है कि आप टेस्ट ट्यूब बेबी के लिये बम्बई चले जायें। उन्होंने बम्बई जाने से पहले मेरे मुधमेह के लिये मुझे इंसुलिन भी चालू करवा दी। डॉक्टर

साहब ने मुझे अच्छे से समझा दिया कि यदि गर्भ धारण होता है तो मुझे पूरे समय इंसुलिन लेनी होगी और दिन में दो से तीन बार खून में शुगर की जाँच करनी होगी। हम उम्मीद लेकर बम्बई की प्रसिद्ध स्त्रीरोग विशेषज्ञ के पास पहुँचे उन्होंने दो हफ्ते दवाईयाँ, इंजेक्शन आदि देने के बाद I.V.F. की प्रक्रिया द्वारा मुझे गर्भधारण करवाने का प्रयास किया। पाँच दिनों बाद ही हमारी खुशी का ठिकाना न रहा जब डॉक्टर ने हमें बताया कि मुझे गर्भधारण हो गया है। डॉक्टर का कहना था कि आप बहुत ही भाग्यशाली है अन्यथा अधिकांश मरीजों में यह प्रक्रिया दो–तीन बार करनी पड़ती है।

डॉक्टर साहब ने मुझे भोपाल जाने से पहले बम्बई के एक प्रसिद्ध डायबिटीज विशेषज्ञ से परामर्श लेने को कहा। हमने वैसा ही किया। डायबिटीज के डॉक्टर साहब ने मुझे दिन में तीन बार इंसुलिन लेने को कहा और बताया कि आपकी सफलता और स्वस्थ शिशु के जन्म के लिये मेरी ब्लड शुगर खाली पेट में (Fasting) 105 से नीचे व खाने के बाद की शुगर 140 के नीचे होना अत्यन्त आवश्यक है। मुझे उस समय बहुत तसल्ली मिली जब उन्होंने भोपाल में मुझे आगे के इलाज के लिये हमारे भोपाल वाले डॉक्टर साहब का ही नाम बताया।

इसके बाद एक तपस्या शुरू हुई। दिन में तीन से चार बार रोजना मैं अपना ब्लड शुगर ग्लूकोमीटर से देखती एवं रोज़ डॉक्टर साहब से फोन पर इंसुलिन का डोज़ निर्धारित करवाती। मैं अपने डॉक्टर के धैर्य एवं लगन की जितनी भी तारीफ करूँ कम है। शुरुआत में काफी दिक्कत आई परंतु मैं अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति एवं डॉक्टर की सहायता से सारी कठिनाईयाँ पार करती गई। मेरा शुगर इतना अच्छा कंट्रोल रहता था कि डॉक्टर साहब भी चकित रह जाते थे। गर्भ के चार माह बीतने पर मेरा ब्लड प्रेशर ज्यादा रहने लगा एवं पैरों में कुछ सूजन भी रहने लगी, जिसके लिये डॉक्टर साहब ने कुछ दवाईयाँ भी शुरू कीं। जब मेरा

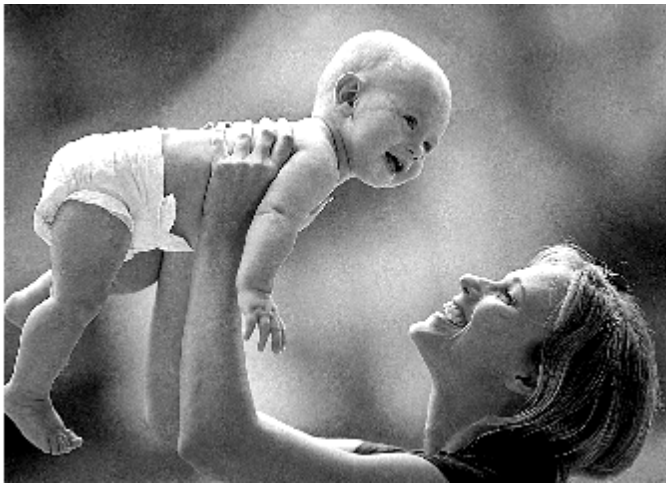

गर्भ छह महीने का हो गया तो मुझे पेट में बच्चे की हलचल का अनुभव होने लगा और मुझे अपनी आशा जल्दी ही साकार होती लगने लगी।

ब्लड प्रेशर एवं सूजन, के कारण आठ महीने पूरे होने पर मेरी लेडी डॉक्टर ने मुझे नर्सिंग होम में भर्ती करवा लिया एवं नौ महीने पूरे होते ही मुझे बताया गया कि एक–दो दिन में सिजेरियन डिलीवरी करायी जायेगी। मेरे पति के अनुरोध पर हमारे मधुमेह विशेषज्ञ मेरे ऑपरेशन के दौरान ऑपरेशन थियेटर में ही रहे। सिजेरियन के बाद एक स्वस्थ बच्ची मेरी गोद में आई।

शादी के ग्यारह साल बाद हम दोनों पति–पत्नी को मधुमेह होते हुये और मेरी दोनों ट्यूब बंद होने के बावजूद भी मुझे संतान की प्राप्ति होना एक मेडिकल साइंस का चमत्कार ही था। हमारे डॉक्टर साहब ने भी बताया कि (I.V.F.) टेस्ट ट्यूब बेबी और डायबिटीज़ का उनका यह पहला अनोखा केस था।

मैं अपने इस लेख के माध्यम से सभी पाठकों को यह संदेश देना चाहूँगी कि वे सिर्फ आधुनिक मेडिकल विज्ञान पर भरोसा करें व नीम हकीमों के चक्कर में न पड़ें। जो महिलाएँ (Infertility) बाँझपन से पीड़ित हैं वे बार–बार डी. एण्ड सी. की जाँच न करायें क्योंकि फैलोपियन ट्यूब बंद होने का खतरा रहता है। अपने डॉक्टर को सम्मान व स्नेह दें वह इसके बदले में आपको कहीं ज्यादा देंगे। ●●●